

सुभद्रा कुमारी चौहान

ठुकरा दो या प्यार करो

देव! तुम्हारे कई उपासक कई ढंग से आते हैं
सेवा में बहुमूल्य भेंट वे कई रंग की लाते हैं

धूमधाम से साज-बाज से वे मंदिर में आते हैं
मुक्तामणि बहुमूल्य वस्तुएँ लाकर तुम्हें चढ़ाते हैं

मैं ही हूँ गरीबिनी ऐसी जो कुछ साथ नहीं लायी
फिर भी साहस कर मंदिर में पूजा करने चली आयी

धूप-दीप-नैवेद्य नहीं है झांकी का श्रृंगार नहीं
हाथ! गले में पहनाने को फूलों का भी हार नहीं

कैसे करूँ कीर्तन, मेरे स्वर में है माधुर्य नहीं
मन का भाव प्रकट करने को वाणी में चातुर्य नहीं

नहीं दान है, नहीं दक्षिणा खाली हाथ चली आयी
पूजा की विधि नहीं जानती, फिर भी नाथ चली आयी

पूजा और पुजापा प्रभुवर इसी पुजारिन को समझो
दान-दक्षिणा और निछावर इसी भिखारिन को समझो

मैं उनमत्त प्रेम की प्यासी हृदय दिखाने आयी हूँ
जो कुछ है, वह यही पास है, इसे चढ़ाने आयी हूँ

चरणों पर अर्पित है, इसको चाहो तो स्वीकार करो
यह तो वस्तु तुम्हारी ही है ठुकरा दो या प्यार करो

वीरों का कैसा हो वसंत

आ रही हिमालय से पुकार
है उदधि गरजता बार बार
प्राची पश्चिम भू नभ अपार;
सब पूछ रहे हैं दिग-दिगन्त
वीरों का कैसा हो वसंत

फूली सरसों ने दिया रंग
मधु लेकर आ पहुँचा अनंग
वधु वसुधा पुलकित अंग अंग;
है वीर देश में किन्तु कंत
वीरों का कैसा हो वसंत

भर रही कोकिला इधर तान
मारू बाजे पर उधर गान
है रंग और रण का विधान;
मिलने को आए आदि अंत
वीरों का कैसा हो वसंत

गलबाहें हों या कृपाण
चलचितवन हो या धनुषबाण
हो रसविलास या दलितत्राण;
अब यही समस्या है दुरंत
वीरों का कैसा हो वसंत

कह दे अतीत अब मौन त्याग
लंके तुझमें क्यों लगी आग
ऐ कुरुक्षेत्र अब जाग जाग;
बतला अपने अनुभव अनंत
वीरों का कैसा हो वसंत

हल्दीघाटी के शिला खण्ड
ऐ दुर्ग सिंहगढ़ के प्रचंड
राणा ताना का कर घमंड;
दो जगा आज स्मृतियां ज्वलंत
वीरों का कैसा हो वसंत

भूषण अथवा कवि चंद नहीं
बिजली भर दे वह छन्द नहीं
है कलम बंधी स्वच्छंद नहीं;
फिर हमें बताए कौन हन्त
वीरों का कैसा हो वसंत

झांसी की रानी की समाधि पर

इस समाधि में छिपी हुई है, एक राख की ढेरी ।
जल कर जिसने स्वतंत्रता की, दिव्य आरती फेरी ॥
यह समाधि यह लघु समाधि है, झांसी की रानी की ।
अंतिम लीलास्थली यही है, लक्ष्मी मरदानी की ॥

यहीं कहीं पर बिखर गई वह, भग्न-विजय-माला-सी ।
उसके फूल यहाँ संचित हैं, है यह स्मृति शाला-सी ।
सहे वार पर वार अंत तक, लड़ी वीर बाला-सी ।
आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर, चमक उठी ज्वाला-सी ।

बढ़ जाता है मान वीर का, रण में बलि होने से ।
मूल्यवती होती सोने की भस्म, यथा सोने से ॥
रानी से भी अधिक हमें अब, यह समाधि है प्यारी ।
यहाँ निहित है स्वतंत्रता की, आशा की चिनगारी ॥

इससे भी सुन्दर समाधियाँ, हम जग में हैं पाते ।
उनकी गाथा पर निशीथ मैं, क्षुद्र जंतु ही गाते ॥
पर कवियों की अमर गिरा में, इसकी अमिट कहानी ।
स्नेह और श्रद्धा से गाती, है वीरों की बानी ॥

बुंदेले हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी ।
खूब लड़ी मरदानी वह थी, झांसी वाली रानी ॥
यह समाधि यह चिर समाधि है, झांसी की रानी की ।
अंतिम लीला स्थली यही है, लक्ष्मी मरदानी की ॥

****सुभद्रा कुमारी चौहान का जीवन परिचय और साहित्यिक योगदान****

सुभद्रा कुमारी चौहान (१६ अगस्त १९०४ - १५ फरवरी १९४८) हिन्दी साहित्य की एक प्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका थीं, जो विशेष रूप से अपनी कविता "झांसी की रानी" के लिए जानी जाती हैं। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और कई बार जेल भी गईं। उनकी रचनाएँ राष्ट्रीयता, समाज और नारी की समस्याओं पर केंद्रित थीं, और वे स्वाधीनता संग्राम की सशक्त सेनानी भी थीं। उनके जीवन का अधिकांश हिस्सा राष्ट्र और समाज के प्रति सेवा में समर्पित रहा।

प्रारंभिक जीवन

सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म इलाहाबाद के निकट निहालपुर नामक गाँव में रामनाथ सिंह के जमींदार परिवार में हुआ था। बचपन से ही उनमें साहित्यिक प्रतिभा की झलक दिखने लगी थी और वे छोटी उम्र से ही कविताएँ लिखने लगी थीं। उनकी प्रारंभिक शिक्षा इलाहाबाद के क्रास्थवेट गर्ल्स स्कूल में हुई, जहाँ उनकी सहेली और साथी कवयित्री महादेवी वर्मा थीं। १९१९ में सुभद्रा जी का विवाह खंडवा के ठाकुर लक्ष्मण सिंह से हुआ, और वे जबलपुर आ गईं। इसके बाद उन्होंने असहयोग आंदोलन में भाग लिया, और १९२१ में महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली पहली महिला बनीं। इस संघर्ष के दौरान वे दो बार जेल भी गईं।

साहित्यिक योगदान

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं और कहानियों में राष्ट्रीय चेतना और नारी समस्याओं का भावपूर्ण चित्रण मिलता है। उनके प्रमुख साहित्यिक योगदानों में कविताएँ और कहानियाँ शामिल हैं, जिनमें उन्होंने नारी विमर्श और समाज में बदलाव की भावना को गहराई से उभारा है। उनकी रचनाएँ सरल भाषा में लिखी गई हैं, जो आम जनमानस के हृदय तक आसानी से पहुँचती हैं।

प्रमुख कविताएँ

उनकी सबसे प्रसिद्ध कविता "झाँसी की रानी" है, जो रानी लक्ष्मीबाई के साहस और वीरता का वर्णन करती है। यह कविता आज भी देशभक्ति के प्रतीक के रूप में देखी जाती है। इसके अलावा, "वीरों का कैसा हो बसंत", "जलियाँवाला बाग में बसंत", "स्वदेश के प्रति", और "झंडे की इज्जत में" जैसी कविताएँ भी प्रसिद्ध हैं।

कथा साहित्य

सुभद्रा कुमारी चौहान ने ४६ कहानियाँ लिखीं, जो हिंदी साहित्य में उच्च स्थान रखती हैं। उनके प्रमुख कहानी संग्रहों में शामिल हैं:

1. ****बिखरे मोती**** (१९३२) - उनका पहला कहानी संग्रह था, जिसमें १५ कहानियाँ थीं। इन कहानियों की भाषा सरल और बोलचाल की थी, और अधिकतर कहानियाँ नारी विमर्श पर केंद्रित थीं।
2. ****उन्मादिनी**** (१९३४) - यह उनका दूसरा कहानी संग्रह था, जिसमें ९ कहानियाँ शामिल थीं। इनमें पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं पर विशेष ध्यान दिया गया था।
3. ****सीधे-साधे चित्र**** (१९४७) - यह उनका तीसरा और अंतिम कहानी संग्रह था, जिसमें १४ कहानियाँ शामिल थीं। इन कहानियों में नारी प्रधान पारिवारिक समस्याओं को विशेष रूप से चित्रित किया गया था।

साहित्यिक शैली

सुभद्रा कुमारी चौहान की साहित्यिक शैली सरल, हृदयग्राही और काव्यात्मक थी। उनकी रचनाओं में वातावरण का सजीव चित्रण और जीवन की सहजता झलकती थी। उनकी कहानियाँ और कविताओं में भारतीय समाज की वास्तविकता और उसमें बदलाव की आवश्यकता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

स्वाधीनता संग्राम में योगदान

स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाने के साथ-साथ सुभद्रा जी की रचनाएँ भी आंदोलन की प्रेरणा बनीं। उनकी कविताओं और लेखन ने राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे गांधी जी के असहयोग आंदोलन में पहली महिला थीं, जिन्होंने आंदोलन का हिस्सा बनकर संघर्ष किया।

सम्मान और पुरस्कार

सुभद्रा कुमारी चौहान को उनके साहित्यिक योगदान के लिए अनेक पुरस्कार मिले। १९३१ और १९३२ में उन्हें 'मुकुल' और 'बिखरे मोती' के लिए सेकसरिया पारितोषिक से सम्मानित किया गया। ६ अगस्त १९७६ को भारतीय डाक विभाग ने उनके सम्मान में २५ पैसे का एक डाक टिकट जारी किया। इसके अतिरिक्त, भारतीय तटरक्षक सेना ने उनके नाम पर एक जहाज का नामकरण भी किया।

निधन

सुभद्रा कुमारी चौहान का निधन १५ फरवरी १९४८ को एक कार दुर्घटना में हुआ था। उनकी पुत्री, सुधा चौहान, ने उनके जीवन पर आधारित "मिला तेज से तेज" नामक पुस्तक लिखी, जिसमें सुभद्रा कुमारी चौहान के संघर्ष और साहित्यिक योगदान को विस्तार से प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्ष

सुभद्रा कुमारी चौहान भारतीय साहित्य और स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। उनकी कविताएँ और कहानियाँ आज भी समाज और राष्ट्र की सेवा करने की प्रेरणा देती हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान

ठुकरा दो या प्यार करो

देव! तुम्हारे कई उपासक कई ढंग से आते हैं
सेवा में बहुमूल्य भेंट वे कई रंग की लाते हैं

धूमधाम से साज-बाज से वे मंदिर में आते हैं
मुक्तामणि बहुमूल्य वस्तुएँ लाकर तुम्हें चढ़ाते हैं

मैं ही हूँ गरीबिनी ऐसी जो कुछ साथ नहीं लायी
फिर भी साहस कर मंदिर में पूजा करने चली आयी

धूप-दीप-नैवेद्य नहीं है झांकी का श्रृंगार नहीं
हाथ! गले में पहनाने को फूलों का भी हार नहीं

कैसे करूँ कीर्तन, मेरे स्वर में है माधुर्य नहीं
मन का भाव प्रकट करने को वाणी में चातुर्य नहीं

नहीं दान है, नहीं दक्षिणा खाली हाथ चली आयी
पूजा की विधि नहीं जानती, फिर भी नाथ चली आयी

पूजा और पुजापा प्रभुवर इसी पुजारिन को समझो
दान-दक्षिणा और निछावर इसी भिखारिन को समझो

मैं उनमत्त प्रेम की प्यासी हृदय दिखाने आयी हूँ
जो कुछ है, वह यही पास है, इसे चढ़ाने आयी हूँ

चरणों पर अर्पित है, इसको चाहो तो स्वीकार करो
यह तो वस्तु तुम्हारी ही है ठुकरा दो या प्यार करो
कविता: ठुकरा दो या प्यार करो (सुभद्रा कुमारी चौहान)

भावार्थ:

इस कविता में कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी भक्ति और प्रेम को ईश्वर के प्रति प्रकट किया है। वह स्वयं को एक गरीब उपासक के रूप में प्रस्तुत करती हैं जो बिना किसी भौतिक भेंट या दिखावे के, केवल अपने सच्चे हृदय और प्रेम के साथ भगवान की पूजा करने आती हैं।

कविता की पहली पंक्तियों में वह कहती हैं कि बहुत से उपासक अलग-अलग ढंग से भगवान की सेवा करते हैं। वे धूमधाम से मंदिर आते हैं और भगवान के चरणों में कौमती वस्तुएँ, मोती, मणि, और अन्य बहुमूल्य चीजें चढ़ाते हैं। परंतु, कवयित्री स्वयं को गरीबिनी कहती हैं जो कुछ भी साथ नहीं लाई हैं, लेकिन फिर भी साहस कर भगवान के दर्शन करने और उनकी पूजा करने आई हैं।

वह आगे कहती हैं कि उसके पास पूजा की विधि के अनुसार चढ़ाने के लिए कोई धूप, दीप, नैवेद्य या फूलों की माला नहीं है। न ही उसके पास कीर्तन करने के लिए मधुर स्वर है, और न ही अपनी भावना को व्यक्त करने के लिए वाणी में कोई विशेष चतुराई है। उसके पास न दान है और न ही दक्षिणा, फिर भी वह केवल अपने सच्चे प्रेम के साथ भगवान की सेवा में प्रस्तुत हुई हैं।

कवयित्री कहती हैं कि उसकी पूजा और चढ़ावा यही प्रेम और भक्ति है, और भगवान को उसी पूजा को स्वीकार करना चाहिए। वह खुद को एक गरीब पुजारिन मानती हैं, जो भगवान के चरणों में अपना हृदय समर्पित कर रही है। वह कहती हैं कि जो कुछ भी उनके पास है, वह भगवान का ही है और उसी के चरणों में अर्पित है। अब भगवान इस प्रेम को स्वीकार करें या ठुकरा दें, यह उनके हाथ में है।

विस्तार से भावार्थ:

कविता के माध्यम से सुभद्रा कुमारी चौहान गहरी आध्यात्मिकता और भक्ति की भावना को प्रकट करती हैं। वह दिखावे और बाहरी विधियों से परे सच्ची भक्ति की ओर संकेत करती हैं। भले ही उसके पास पूजा के पारंपरिक साधन (जैसे धूप, दीप, फूल, या भेंट) न हो, उसका सच्चा और पवित्र प्रेम ही उसकी पूजा है। यह कविता यह संदेश देती है कि भक्ति का असली मापदंड बाहरी साधनों से नहीं, बल्कि सच्चे मन और प्रेम से होता है।

कवयित्री का आग्रह है कि ईश्वर केवल उन भक्तों को ही न देखें जो धूमधाम और भेंट लेकर आते हैं, बल्कि उन गरीब भक्तों को भी स्वीकार करें जो सच्ची भक्ति के साथ केवल प्रेम और हृदय को अर्पित करने आते हैं। उनका प्रेम और समर्पण ही उनकी सबसे बड़ी भेंट है, और वह ईश्वर से अपेक्षा करती हैं कि वे इस प्रेम को स्वीकार करें, चाहे उनके पास चढ़ाने के लिए कुछ और न हो।

****निष्कर्ष**:**

कविता के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि सच्ची भक्ति भौतिक साधनों की मोहताज नहीं होती। भगवान को अर्पण करने के लिए जरूरी नहीं कि उपासक के पास धन, भेंट, या भौतिक वस्तुएं हों। सच्ची भक्ति और प्रेम ही सबसे बड़ी भेंट होती है, और भगवान को उसे स्वीकार करना चाहिए।

****कविता: ठुकरा दो या प्यार करो (सुभद्रा कुमारी चौहान) - सारांश****

इस कविता में कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान अपने सच्चे प्रेम और भक्ति को भगवान के चरणों में समर्पित करती हैं। वह खुद को एक गरीब भक्त मानती हैं, जिसके पास न तो पूजा के लिए धूप, दीप, नैवेद्य, फूल हैं और न ही मधुर स्वर या वाणी की चतुराई है। वह बिना किसी भौतिक वस्तु के, केवल अपने प्रेम और समर्पण के साथ भगवान की पूजा करने आई हैं। कवयित्री कहती हैं कि उनकी भक्ति और प्रेम ही उनकी सबसे बड़ी भेंट है, और भगवान इसे स्वीकार करें या ठुकरा दें, यह उन्हीं पर निर्भर है।

यह कविता सच्ची भक्ति और प्रेम की महत्ता को दर्शाती है, जो बाहरी दिखावे या सामग्री से अधिक महत्वपूर्ण है।

कविता "ठुकरा दो या प्यार करो" का उद्देश्य सच्ची भक्ति और समर्पण की महत्ता को दर्शाना है। सुभद्रा कुमारी चौहान इस कविता के माध्यम से यह संदेश देती हैं कि ईश्वर की पूजा के लिए भौतिक वस्तुएं, धन, और बाहरी आडंबर आवश्यक नहीं हैं। असली भक्ति हृदय से की गई भक्ति है, जो प्रेम और समर्पण पर आधारित होती है। कवयित्री यह स्पष्ट करती हैं कि भक्ति की सार्थकता दिखावे में नहीं, बल्कि सच्ची भावना और निस्वार्थ प्रेम में होती है।

****कविता: ठुकरा दो या प्यार करो (सुभद्रा कुमारी चौहान)****

विस्तृत व्याख्या:

****पहली पंक्ति:****

“देव! तुम्हारे कई उपासक कई ढंग से आते हैं
सेवा में बहुमूल्य भेंट वे कई रंग की लाते हैं”

कवयित्री कविता की शुरुआत में भगवान से सीधे संवाद करती हैं। वह कहती हैं कि बहुत से उपासक अलग-अलग प्रकार की भेंट और साधनों के साथ भगवान की पूजा करने आते हैं। हर कोई अपने तरीके से भगवान को प्रसन्न करने की कोशिश करता है, और वे बहुमूल्य वस्तुएं लाते हैं, जिनमें विभिन्न प्रकार की भेंटें होती हैं। यहाँ कवयित्री यह बताती हैं कि लोग साधारणतः पूजा में भगवान को प्रसन्न करने के लिए मूल्यवान वस्तुएं चढ़ाते हैं।

****दूसरी पंक्ति:****

“धूमधाम से साज-बाज से वे मंदिर में आते हैं
मुक्तामणि बहुमूल्य वस्तुएं लाकर तुम्हें चढ़ाते हैं”

यहाँ कवयित्री उन भक्तों का वर्णन करती हैं, जो धूमधाम से साज-बाज के साथ मंदिर आते हैं और भगवान के सामने मोती, मणि, और कीमती वस्तुएं चढ़ाते हैं। ये भक्त अपनी भक्ति दिखाने के लिए महंगे चढ़ावे लाते हैं और प्रकट रूप से अपनी श्रद्धा प्रकट करते हैं।

****तीसरी पंक्ति:****

“मैं ही हूँ गरीबिनी ऐसी जो कुछ साथ नहीं लायी
फिर भी साहस कर मंदिर में पूजा करने चली आयी”

अब कवयित्री स्वयं को प्रस्तुत करती हैं। वह कहती हैं कि वह खुद एक गरीब भक्त हैं, जिनके पास भगवान को चढ़ाने के लिए कोई महंगे चढ़ावे या वस्तुएं नहीं हैं। बावजूद इसके, उन्होंने साहस किया और बिना किसी भौतिक वस्तु के भगवान

की पूजा करने मंदिर आ गई। यह पंक्तियाँ उनके आत्मविश्वास और सच्ची भक्ति को प्रकट करती हैं, जिसमें उन्होंने अपनी स्थिति के बावजूद भगवान के सामने जाने का साहस दिखाया है।

****चौथी पंक्ति:****

—“धूप-दीप-नैवेद्य नहीं है झांकी का श्रृंगार नहीं
हाय! गले में पहनाने को फूलों का भी हार नहीं”—

यहाँ कवयित्री अपनी दीन-हीन स्थिति का वर्णन करती हैं। उनके पास भगवान को चढ़ाने के लिए न धूप है, न दीप है, न नैवेद्य है, और न ही भगवान की मूर्ति की सजावट के लिए कोई श्रृंगार है। यहाँ तक कि उनके पास भगवान के गले में पहनाने के लिए फूलों का हार भी नहीं है। यह सब भौतिक वस्तुएँ हैं, जिन्हें लोग पूजा के दौरान उपयोग करते हैं, लेकिन कवयित्री के पास इनमें से कुछ भी नहीं है।

****पाँचवी पंक्ति:****

—“कैसे करूँ कीर्तन, मेरे स्वर में है माधुर्य नहीं
मन का भाव प्रकट करने को वाणी में चातुर्य नहीं”—

यहाँ कवयित्री कहती हैं कि वह कीर्तन भी नहीं कर सकतीं, क्योंकि उनके स्वर में मधुरता नहीं है। वे अपने मन की भावनाओं को प्रकट करने के लिए भी वाणी में कोई विशेष चतुराई या कुशलता नहीं रखतीं। यहाँ कवयित्री यह बता रही हैं कि उनके पास न तो सुरीला स्वर है, न भाषा की चतुराई, जिससे वे अपनी भक्ति प्रकट कर सकें।

****छठी पंक्ति:****

—“नहीं दान है, नहीं दक्षिणा खाली हाथ चली आयी
पूजा की विधि नहीं जानती, फिर भी नाथ चली आयी”—

यहाँ कवयित्री बताती हैं कि उनके पास न तो दान है और न ही दक्षिणा है। वे खाली हाथ ही भगवान की पूजा करने आई हैं। उन्हें पूजा की विधि भी सही ढंग से नहीं आती, लेकिन फिर भी वे भगवान की सेवा करने और अपनी भक्ति अर्पित करने के लिए आ गई हैं। इससे उनकी भक्ति की सच्चाई और निस्वार्थता प्रकट होती है।

****सातवीं पंक्ति:****

—“पूजा और पुजापा प्रभुवर इसी पुजारिन को समझो
दान-दक्षिणा और निछावर इसी भिखारिन को समझो”—

यहाँ कवयित्री भगवान से निवेदन करती हैं कि वे उनकी इस पूजा और पुजापा को स्वीकार करें। वह कहती हैं कि भगवान उन्हें एक पुजारिन समझें, और उनके द्वारा दिया गया यह प्रेम और समर्पण ही उनकी दान-दक्षिणा है। यहाँ वह खुद को भिखारिन मानती हैं, जो अपनी भक्ति से भगवान को प्रसन्न करने आई हैं।

****आठवीं पंक्ति:****

—“मैं उनमत्त प्रेम की प्यासी हृदय दिखाने आयी हूँ
जो कुछ है, वह यही पास है, इसे चढ़ाने आयी हूँ”—

कवयित्री आगे कहती हैं कि वह प्रेम की प्यासी हैं और उनके पास सिर्फ हृदय का सच्चा प्रेम ही है, जिसे वे भगवान के चरणों में अर्पित करने आई हैं। यह पंक्ति उनकी भक्ति की गहराई को प्रकट करती है, जहाँ वह यह स्वीकार करती हैं कि उनके पास और कुछ नहीं, केवल सच्चा प्रेम ही है जो वे भगवान को अर्पित करना चाहती हैं।

****नौवीं पंक्ति:****

—“चरणों पर अर्पित है, इसको चाहो तो स्वीकार करो
यह तो वस्तु तुम्हारी ही है ठुकरा दो या प्यार करो”—

अंतिम पंक्तियों में कवयित्री अपने समर्पण की पूर्णता को प्रकट करती हैं। वह भगवान के चरणों में अपना प्रेम और हृदय अर्पित कर चुकी हैं। अब यह भगवान पर निर्भर है कि वे इस प्रेम को स्वीकार करें या ठुकरा दें। कवयित्री यहाँ अपने प्रेम को भगवान की ही वस्तु मानती हैं और उन्हें पूर्ण स्वतंत्रता देती हैं कि वे इसे स्वीकार करें या अस्वीकार करें।

समग्र व्याख्या:

इस कविता में सुभद्रा कुमारी चौहान ने भक्ति की सच्चाई और साधारणता को उकेरा है। उन्होंने यह संदेश दिया है कि भक्ति के लिए धन, वस्त्र, चढ़ावे, या दिखावे की आवश्यकता नहीं होती। सच्ची भक्ति वही है जो बिना किसी स्वार्थ और बाहरी आडंबर के भगवान के प्रति समर्पित हो। कवयित्री अपनी दीन-हीन स्थिति का उल्लेख करते हुए यह कहती हैं कि

उनके पास भौतिक साधन नहीं हैं, लेकिन उनका प्रेम और समर्पण इतना सच्चा और गहरा है कि भगवान को उसे स्वीकार करना चाहिए।

इस कविता के माध्यम से यह समझाया गया है कि भगवान को प्रसन्न करने के लिए साधारण उपासक का सच्चा प्रेम ही पर्याप्त है, न कि बाहरी दिखावे या महंगे चढ़ावे।

वीरों का कैसा हो वसंत

आ रही हिमालय से पुकार
है उदधि गरजता बार बार
प्राची पश्चिम भू नभ अपार;
सब पूछ रहे हैं दिग-दिगन्त
वीरों का कैसा हो वसंत

फूली सरसों ने दिया रंग
मधु लेकर आ पहुंचा अनंग
वधु वसुधा पुलकित अंग अंग;
है वीर देश में किन्तु कंत
वीरों का कैसा हो वसंत

भर रही कोकिला इधर तान
मारू बाजे पर उधर गान
है रंग और रण का विधान;
मिलने को आए आदि अंत
वीरों का कैसा हो वसंत

गलबाहें हों या कृपाण
चलचितवन हो या धनुषबाण
हो रसविलास या दलितत्राण;
अब यही समस्या है दुरंत
वीरों का कैसा हो वसंत

कह दे अतीत अब मौन त्याग
लंके तुझमें क्यों लगी आग
ऐ कुरुक्षेत्र अब जाग जाग;
बर्तला अपने अनुभव अनंत
वीरों का कैसा हो वसंत

हल्दीघाटी के शिला खण्ड
ऐ दुर्ग सिंहगढ़ के प्रचंड
राणा ताना का कर घमंड;
दो जगा आज स्मृतियां ज्वलंत
वीरों का कैसा हो वसंत

भूषण अथवा कवि चंद नहीं
बिजली भर दे वह छन्द नहीं
है कलम बंधी स्वच्छंद नहीं;
फिर हमें बताए कौन हन्त
वीरों का कैसा हो वसंत

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता "वीरों का कैसा हो वसंत" में वीरता और देशभक्ति की भावना का सुंदर चित्रण किया गया है। यह कविता एक प्रश्न उठाती है कि जब देश के वीर सपूत युद्ध के मैदान में हों, देश की सुरक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दे रहे हों, तब उनके लिए वसंत ऋतु कैसी होनी चाहिए? सामान्यतः वसंत को प्रेम, आनंद और सौंदर्य का प्रतीक माना जाता है, लेकिन वीरों के लिए यह समय कुछ अलग होता है। आइए इस कविता के भावार्थ को विस्तार से समझते हैं:

भावार्थ:

****पहला पद:****

कवयित्री हिमालय से आती पुकार और समुद्र की गरज को सुनने का वर्णन करती हैं। धरती के सभी दिशाओं से यह प्रश्न उठ रहा है कि वीरों का वसंत कैसा होना चाहिए। यहां वीरता और देश की रक्षा को सर्वोपरि मानते हुए कवयित्री यह प्रश्न उठाती हैं कि जिस देश में वीरों की उपस्थिति हो, वहां वसंत ऋतु कैसा हो?

****दूसरा पद:****

वसंत ऋतु का चित्रण करते हुए कहा गया है कि सरसों फूल चुकी है और प्रेम के देवता कामदेव मधुरता लेकर आ चुके हैं। पूरी धरती का हर अंग आनंदित और पुलकित हो रहा है। लेकिन जब देश में वीर होते हैं, जो कांत (प्रिय) समान होते हैं, उनके लिए वसंत का रूप कैसा होना चाहिए?

****तीसरा पद:****

यहां कोयल की मधुर तान और युद्ध की ध्वनि का जिक्र किया गया है। एक ओर कोयल के गाने से मधुरता है, वहीं दूसरी ओर युद्ध के लिए तैयार होने की ध्वनि भी है। कवयित्री पूछती हैं कि रंग और रण (युद्ध) के इस अद्वितीय संयोग में वीरों का वसंत कैसा होना चाहिए, जब आनंद और संघर्ष दोनों एक साथ उपस्थित हैं?

****चौथा पद:****

यहां इस दुविधा का वर्णन किया गया है कि वीरों के लिए वसंत में क्या हो—गलबहियां (प्रेम) या कृपाण (तलवार)? वीरों के लिए धनुष-बाण और रसविलास (आनंद) दोनों का निर्णय करना मुश्किल हो गया है। यही आज की गंभीर समस्या है कि वीरों के लिए वसंत कैसा हो?

****पांचवां पद:****

कवयित्री अतीत से मौन तोड़ने का आग्रह करती हैं। वह अतीत के वीर युद्धक्षेत्रों जैसे लंका और कुरुक्षेत्र को पुकार कर कहती हैं कि वे अपने अनुभवों से बताएं कि जब वे युद्धरत थे तब उनके लिए वसंत कैसा था। इस प्रकार अतीत की वीरगाथाओं से प्रेरणा ली जाती है।

****छठा पद:****

कवयित्री हल्दीघाटी के युद्ध, सिंहगढ़ की दुर्गम लड़ाई और वीर राणा प्रताप तथा तानाजी मालुसरे जैसे वीरों की स्मृतियों को जागृत करने का प्रयास करती हैं। इन वीरों की गाथाओं से प्रेरणा लेकर यह पूछा जाता है कि वीरों का वसंत कैसा होना चाहिए।

****सातवां पद:****

अंत में कवयित्री यह कहती हैं कि न तो कवि भूषण हैं, न कवि चंद, जो अपनी वीर रस से भरी कविताओं से ऊर्जा भर सकते थे। आज के समय में भी ऐसी कविता की आवश्यकता है जो वीरों में बिजली भर सके। लेकिन आज का समय ऐसा नहीं है, जिससे यह प्रश्न और भी गूढ़ हो जाता है कि वीरों के लिए वसंत कैसा हो।

समग्र भावार्थ:

कविता का मुख्य भाव यह है कि जब देश के वीर सैनिक युद्ध में अपने प्राणों की आहुति दे रहे हों, तब वसंत का पारंपरिक रूप उनके लिए अर्थहीन हो जाता है। वीरों के लिए वसंत केवल प्रेम, सौंदर्य और आनंद का प्रतीक नहीं हो सकता, बल्कि उनके लिए यह समय कर्तव्य, संघर्ष और देशभक्ति से भरा हुआ होता है। देश के वीरों के लिए वसंत का सही स्वरूप वह है जिसमें वे अपने देश की रक्षा और सम्मान के लिए जीवन न्योछावर करने के लिए तत्पर होते हैं।

कविता का सारांश

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता "वीरों का कैसा हो वसंत" में वीरता और देशभक्ति का भाव प्रधान है। कवयित्री प्रश्न उठाती हैं कि जब देश के वीर सपूत युद्ध में होते हैं, तब उनके लिए वसंत ऋतु का आनंद और सौंदर्य कैसा होना चाहिए? वसंत ऋतु में प्राकृतिक सौंदर्य, प्रेम और आनंद का माहौल होता है, लेकिन वीरों के लिए यह समय युद्ध, संघर्ष और कर्तव्य निभाने का है। कविता में अतीत के वीरों, जैसे राणा प्रताप और तानाजी की स्मृतियों को जागृत कर वीरता की प्रेरणा ली गई है। वीरों का वसंत प्रेम और आनंद का नहीं, बल्कि कर्तव्य और देश रक्षा का समय होता है।

कविता का उद्देश्य

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता "वीरों का कैसा हो वसंत" का उद्देश्य देशभक्ति और वीरता का गुणगान करना है। कवयित्री ने इस कविता के माध्यम से यह संदेश दिया है कि जब देश पर संकट आता है, तो वीरों के लिए आनंद और उत्सव का समय नहीं होता, बल्कि उनका वसंत संघर्ष, कर्तव्य और युद्ध का होता है। यह कविता वीरों की वीरता, उनके त्याग, और देश के प्रति उनके समर्पण को प्रमुखता से प्रस्तुत करती है। इसका उद्देश्य देशवासियों को वीरता और कर्तव्य के प्रति जागरूक करना और उन्हें प्रेरित करना है कि वे राष्ट्र की सुरक्षा के लिए अपने व्यक्तिगत सुखों से ऊपर उठें।

कविता की व्याख्या

****सुभद्रा कुमारी चौहान**** की कविता "वीरों का कैसा हो वसंत" में कवयित्री ने वीरता, देशभक्ति और कर्तव्य पर आधारित भावों को व्यक्त किया है। इस कविता में वह प्रश्न उठाती हैं कि जब देश के वीर सैनिक देश की रक्षा के लिए युद्ध में उतरते हैं, तो उनके लिए वसंत ऋतु कैसी होनी चाहिए? आइए अब इस कविता की विस्तार से व्याख्या करते हैं:

**पहला पद:**

****आ रही हिमालय से पुकार
है उदधि गरजता बार-बार
प्राची-पश्चिम भू नभ अपार;
सब पूछ रहे हैं दिग-दिगंत,
वीरों का कैसा हो वसंत?*****

इस पद में कवयित्री ने हिमालय और समुद्र के माध्यम से प्रतीकात्मकता का प्रयोग किया है। हिमालय से आ रही पुकार और समुद्र की गरज यह संकेत देती हैं कि देश के वीरों को एक आह्वान किया जा रहा है। दिशाएं, आकाश और धरती का विस्तार पूछ रहे हैं कि वीरों के लिए वसंत का स्वरूप क्या हो? यहाँ कवयित्री इस बात को इंगित कर रही हैं कि जब देश संकट में हो, तब वीरों के लिए वसंत का आनंद लेने का समय नहीं है, बल्कि उनके लिए यह समय देश की रक्षा का है।

**दूसरा पद:**

****फूली सरसों ने दिया रंग
मधु लेकर आ पहुँचा अनंग
वधु वसुधा पुलकित अंग-अंग;
है वीर देश में किंतु कंत,
वीरों का कैसा हो वसंत?*****

इस पद में वसंत के प्राकृतिक सौंदर्य और प्रेम का चित्रण किया गया है। फूली हुई सरसों वसंत का प्रतीक है, और कामदेव (अनंग) मधुरता लेकर आए हैं। पूरी धरती आनंदित हो रही है, जैसे एक वधु (विवाहित स्त्री) अपने अंग-अंग में पुलकित हो। परन्तु, जब देश के वीर सैनिक युद्ध के मैदान में हों, तो उनके लिए यह सौंदर्य और प्रेम से भरा वसंत कैसे हो सकता है? इस प्रश्न के माध्यम से कवयित्री वीरता और प्रेम के बीच के द्वंद्व को व्यक्त करती हैं।

**तीसरा पद:**

****भर रही कोकिला इधर तान
मारू बाजे पर उधर गान
है रंग और रण का विधान;
मिलने को आए आदि अंत,
वीरों का कैसा हो वसंत?*****

इस पद में वसंत के संगीत और युद्ध की ध्वनि के बीच का विरोधाभास प्रस्तुत किया गया है। एक ओर कोयल अपनी मधुर तान भर रही है, जो वसंत का प्रतीक है, जबकि दूसरी ओर युद्ध के बाजे बज रहे हैं। यह स्थिति दर्शाती है कि वसंत में रंग (आनंद) और रण (युद्ध) दोनों साथ-साथ चल रहे हैं। कवयित्री पूछती हैं कि जब आनंद और युद्ध दोनों मिलते हैं, तो वीरों के लिए वसंत का स्वरूप क्या हो सकता है?

**चौथा पद:**

****गलबाहें हों या कृपाण
चलचितवन हो या धनुषबाण
हो रसविलास या दलितत्राण;
अब यही समस्या है दुरंत,
वीरों का कैसा हो वसंत?*****

इस पद में प्रेम और युद्ध के बीच का चुनाव प्रस्तुत किया गया है। क्या वीरों के लिए गलबाहें (प्रेम) महत्वपूर्ण हैं या कृपाण (तलवार)? क्या वे प्रेम भरी दृष्टि (चलचितवन) चाहते हैं या युद्ध के धनुष-बाण? यह सवाल इस ओर इशारा करता है कि वीरों के सामने यह चुनौती है कि उन्हें प्रेम और कर्तव्य के बीच किसे चुनना चाहिए। वीरों के लिए वसंत युद्ध और कर्तव्य का प्रतीक है, न कि प्रेम और सुख का।

**पांचवां पद:**

****कह दे अतीत अब मौन त्याग
लंके तुझमें क्यों लगी आग
ऐ कुरुक्षेत्र अब जाग जाग;
बतला अपने अनुभव अनंत,
वीरों का कैसा हो वसंत?*****

यहाँ कवयित्री अतीत के ऐतिहासिक युद्धों की बात करती हैं। वह लंका और कुरुक्षेत्र के युद्धस्थलों को पुकारती हैं, जो वीरता और संघर्ष के प्रतीक हैं। वह इन स्थानों से यह जानना चाहती हैं कि जब ये युद्ध हो रहे थे, तब वहाँ के वीरों का वसंत कैसा था? क्या वे प्रेम में लिप्त थे, या फिर अपने कर्तव्य और युद्ध में व्यस्त थे? अतीत से प्रेरणा लेकर कवयित्री वर्तमान वीरों को संदेश देती हैं कि वीरों के लिए वसंत केवल कर्तव्य और संघर्ष का समय होता है।

छठा पद:

*"हल्दीघाटी के शिला खण्ड
ऐ दुर्ग सिंहगढ़ के प्रचंड
राणा ताना का कर घमंड;
दो जगा आज स्मृतियाँ ज्वलंत,
वीरों का कैसा हो वसंत?"*

इस पद में कवयित्री हल्दीघाटी और सिंहगढ़ जैसे ऐतिहासिक युद्धस्थलों का स्मरण करती हैं। राणा प्रताप और तानाजी मालुसरे जैसे वीरों का घमंड (गर्व) भी इस कविता में शामिल किया गया है। कवयित्री इन वीरों की स्मृतियों को जागृत कर रही हैं और यह पूछ रही हैं कि जब वे युद्ध कर रहे थे, तब उनके लिए वसंत का क्या अर्थ था? यह संकेत करता है कि वीरों के लिए वसंत का समय देश की रक्षा और युद्ध के लिए है, न कि प्रेम और आनंद के लिए।

सातवां पद:

*"भूषण अथवा कवि चंद नहीं
बिजली भर दे वह छंद नहीं
है कलम बंधी स्वच्छंद नहीं;
फिर हमें बताए कौन हंत,
वीरों का कैसा हो वसंत?"*

अंतिम पद में कवयित्री यह कहती हैं कि आज के समय में कोई कवि भूषण या कवि चंद नहीं है, जो अपनी वीर रस से भरी कविताओं में वीरता की भावना को जगा सके। आज की कलम स्वतंत्र नहीं है, वह अपनी सीमाओं में बंधी है। ऐसे में यह प्रश्न और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि वीरों का वसंत कैसा होना चाहिए? वीरों को किस प्रकार प्रेरित किया जा सकता है, यह बड़ा सवाल है।

सारांश:

कविता "वीरों का कैसा हो वसंत" में कवयित्री ने यह संदेश दिया है कि वसंत का पारंपरिक आनंद और सौंदर्य वीरों के लिए तब अर्थहीन हो जाता है, जब वे युद्ध के मैदान में होते हैं। वीरों के लिए वसंत केवल प्रेम और सौंदर्य का नहीं, बल्कि कर्तव्य और युद्ध का समय होता है। वीरों का वसंत संघर्ष, त्याग और देशभक्ति से भरा होता है, न कि व्यक्तिगत सुख और प्रेम से। कविता में अतीत के वीरों की स्मृतियों को जागृत कर वर्तमान समय के वीरों को प्रेरित किया गया है।

झांसी की रानी की समाधि पर

इस समाधि में छिपी हुई है, एक राख की ढेरी |
जल कर जिसने स्वतंत्रता की, दिव्य आरती फेरी ||
यह समाधि यह लघु समाधि है, झांसी की रानी की |
अंतिम लीलास्थली यही है, लक्ष्मी मरदानी की ||

यहीं कहीं पर बिखर गई वह, भग्न-विजय-माला-सी |
उसके फूल यहाँ संचित हैं, है यह स्मृति शाला-सी |
सहे वार पर वार अंत तक, लड़ी वीर बाला-सी |
आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर, चमक उठी ज्वाला-सी |

बढ़ जाता है मान वीर का, रण में बलि होने से |
मूल्यवती होती सोने की भस्म, यथा सोने से ||
रानी से भी अधिक हमें अब, यह समाधि है प्यारी |
यहाँ निहित है स्वतंत्रता की, आशा की चिनगारी ||

इससे भी सुन्दर समाधियाँ, हम जग में हैं पाते |
उनकी गाथा पर निशीथ मैं, क्षुद्र जंतु ही गाते ||
पर कवियों की अमर गिरा में, इसकी अमिट कहानी |
स्नेह और श्रद्धा से गाती, है वीरों की बानी ||

बुंदेले हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी |
खूब लड़ी मरदानी वह थी, झांसी वाली रानी ||
यह समाधि यह चिर समाधि है, झांसी की रानी की |
अंतिम लीला स्थली यही है, लक्ष्मी मरदानी की ||

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता "झांसी की रानी की समाधि पर" में कवयित्री ने झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की वीरता, बलिदान और स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान को अत्यंत श्रद्धा और सम्मान के साथ प्रस्तुत किया है। यह कविता रानी लक्ष्मीबाई की समाधि पर केंद्रित है और उनकी वीरगाथा को स्मरण करते हुए देश की स्वतंत्रता के प्रति उनका बलिदान उजागर करती है। आइए इस कविता के भावार्थ को विस्तार से समझते हैं:

प्रथम पद:

"इस समाधि में छिपी हुई है, एक राख की ढेरी
जल कर जिसने स्वतंत्रता की, दिव्य आरती फेरी
यह समाधि यह लघु समाधि है, झांसी की रानी की
अंतिम लीलास्थली यही है, लक्ष्मी मरदानी की"

इस पद में कवयित्री रानी लक्ष्मीबाई की समाधि की ओर संकेत करती हैं, जो एक राख की ढेरी के रूप में है, पर वह राख केवल राख नहीं है—यह वही राख है जिसने स्वतंत्रता की आरती जलाकर फेरी है। कवयित्री कहती हैं कि यह झांसी की रानी की लघु समाधि है, जो उनकी अंतिम लीलास्थली है। रानी लक्ष्मीबाई को 'मरदानी' कहा गया है, क्योंकि उन्होंने पुरुषों के समान वीरता दिखाई और संघर्ष किया।

द्वितीय पद:

"यहीं कहीं पर बिखर गई वह, भग्न-विजय-माला-सी
उसके फूल यहाँ संचित हैं, है यह स्मृति शाला-सी
सहे वार पर वार अंत तक, लड़ी वीर बाला-सी
आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर, चमक उठी ज्वाला-सी"

यहाँ कवयित्री रानी लक्ष्मीबाई के बलिदान का वर्णन करती हैं। वह कहती हैं कि रानी का बलिदान बिखरी हुई विजय-माला की तरह था, जिसके फूल अब उनकी समाधि में संचित हैं। यह समाधि उनके संघर्ष और वीरता की स्मृति शाला है। रानी ने अंत तक वार झेला और वीरता से लड़ी। जब वह युद्ध में मारी गईं, तो यह आहुति के समान थी, जैसे कोई बलिदान होकर चिता पर गिर गया हो और उससे ज्वाला चमक उठी हो। रानी का बलिदान स्वतंत्रता की ज्योति के समान था।

तृतीय पद:

"बढ़ जाता है मान वीर का, रण में बलि होने से
मूल्यवती होती सोने की भस्म, यथा सोने से
रानी से भी अधिक हमें अब, यह समाधि है प्यारी
यहाँ निहित है स्वतंत्रता की, आशा की चिनगारी"

इस पद में कवयित्री कहती हैं कि युद्ध में वीर का मान और अधिक बढ़ जाता है जब वह रणभूमि में बलिदान होता है। सोने की भस्म (राख) भी मूल्यवान होती है, ठीक वैसे ही जैसे सोना मूल्यवान होता है। रानी लक्ष्मीबाई से भी अब उनकी समाधि अधिक प्रिय हो गई है, क्योंकि इसमें स्वतंत्रता की आशा की चिंगारी निहित है। उनकी समाधि केवल एक स्मारक नहीं, बल्कि स्वतंत्रता की प्रेरणा और संघर्ष की शक्ति का प्रतीक है।

चतुर्थ पद:

"इससे भी सुन्दर समाधियाँ, हम जग में हैं पाते
उनकी गाथा पर निशीथ मैं, क्षुद्र जंतु ही गाते
पर कवियों की अमर गिरा में, इसकी अमिट कहानी
स्नेह और श्रद्धा से गाती, है वीरों की बानी"

कवयित्री कहती हैं कि संसार में इससे भी सुंदर और भव्य समाधियाँ मिल सकती हैं, लेकिन उनकी गाथा को केवल छोटे और क्षुद्र जीव ही गाते हैं। झांसी की रानी की समाधि की कहानी अमर है, जो कवियों के शब्दों में सदैव जीवित रहेगी। वीरों की वाणी इस कहानी को स्नेह और श्रद्धा से गाती है, क्योंकि यह वीरता और बलिदान की अद्भुत गाथा है, जो कभी मिटने वाली नहीं है।

पंचम पद:

"बुंदेले हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी
खूब लड़ी मरदानी वह थी, झांसी वाली रानी
यह समाधि यह चिर समाधि है, झांसी की रानी की

अंतिम लीला स्थली यही है, लक्ष्मी मरदानी की**

कविता के इस अंतिम पद में कवयित्री बुंदेलखंड के हरबोलों की उन कहानियों का स्मरण करती हैं, जिनमें झांसी की रानी की वीरता का वर्णन किया गया है। वह कहती हैं कि रानी लक्ष्मीबाई ने खूब वीरता से युद्ध किया और मरदानी की तरह लड़ी। यह उनकी चिर समाधि है, जहाँ उनकी अंतिम लीला (आखिरी संघर्ष) सम्पन्न हुई थी।

सारांश:

सुभद्रा कुमारी चौहान की यह कविता झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की वीरता, बलिदान और संघर्ष को श्रद्धांजलि है। कविता के माध्यम से रानी की समाधि को केवल एक स्थल के रूप में नहीं, बल्कि स्वतंत्रता की अमर प्रेरणा के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। रानी लक्ष्मीबाई ने अपने प्राणों की आहुति देकर स्वतंत्रता संग्राम की ज्वाला को प्रज्वलित किया, और उनकी समाधि में स्वतंत्रता की आशा की चिंगारी अब भी जीवित है।

कविता का उद्देश्य

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता "झांसी की रानी की समाधि पर" का उद्देश्य झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की वीरता, बलिदान और स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान को स्मरण कराना और उनका सम्मान करना है। इस कविता के माध्यम से कवयित्री राष्ट्रप्रेम, वीरता और स्वतंत्रता के प्रति समर्पण की भावना को जाग्रत करना चाहती हैं। रानी लक्ष्मीबाई की समाधि को एक प्रेरणादायक स्थल के रूप में प्रस्तुत करते हुए, कविता यह संदेश देती है कि उनका बलिदान केवल अतीत की घटना नहीं है, बल्कि स्वतंत्रता के प्रति हमारी आशाओं और संघर्षों की चिंगारी अब भी जीवित है। इसका उद्देश्य आने वाली पीढ़ियों को देशभक्ति, साहस और स्वतंत्रता के लिए बलिदान की प्रेरणा देना है।

कविता की व्याख्या

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता "झांसी की रानी की समाधि पर" में रानी लक्ष्मीबाई के बलिदान और वीरता को भावपूर्ण ढंग से व्यक्त किया गया है। कवयित्री ने झांसी की रानी के बलिदान को एक राष्ट्रीय गर्व और प्रेरणा का प्रतीक माना है। कविता रानी की समाधि पर केंद्रित है, लेकिन यह मात्र एक शिला या स्मारक नहीं है, बल्कि यह स्वतंत्रता के संघर्ष और देशप्रेम की अमर कहानी का प्रतीक है। आइए कविता की पंक्ति-दर-पंक्ति व्याख्या करें।

प्रथम पद:

"इस समाधि में छिपी हुई है, एक राख की ढेरी
जल कर जिसने स्वतंत्रता की, दिव्य आरती फेरी
यह समाधि यह लघु समाधि है, झांसी की रानी की
अंतिम लीलास्थली यही है, लक्ष्मी मरदानी की**

कवयित्री रानी लक्ष्मीबाई की समाधि के बारे में बताती हैं, जो एक राख की ढेरी के रूप में है। यह राख साधारण नहीं है, बल्कि यह उस वीर नारी की है जिसने अपने प्राणों की आहुति देकर स्वतंत्रता की दिव्य आरती जलाई। रानी लक्ष्मीबाई के बलिदान को कवयित्री दिव्य आरती के रूप में देखती हैं, जो स्वतंत्रता की ज्योति को प्रज्वलित करने का प्रतीक है। यह समाधि झांसी की रानी की अंतिम लीलास्थली है, जहाँ उन्होंने अपना अंतिम बलिदान दिया। यहाँ रानी को "लक्ष्मी मरदानी" कहा गया है, जो उनकी वीरता और साहस को दर्शाता है।

द्वितीय पद:

"यहीं कहीं पर बिखर गई वह, भग्न-विजय-माला-सी
उसके फूल यहाँ संचित हैं, है यह स्मृति शाला-सी
सहे वार पर वार अंत तक, लड़ी वीर बाला-सी
आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर, चमक उठी ज्वाला-सी**

इस पद में कवयित्री रानी लक्ष्मीबाई के बलिदान की तुलना एक बिखरी हुई विजय-माला से करती हैं। यह माला टूटी हुई है, लेकिन उसके फूल इस समाधि में संचित हैं, जो रानी के संघर्ष और वीरता की स्मृति को जीवित रखते हैं। रानी ने अंत तक युद्ध में एक वीर बालिका की तरह संघर्ष किया। कवयित्री इस संघर्ष को एक आहुति के समान मानती हैं, जिसमें रानी चिता पर बलिदान के रूप में गिर गई और उनकी ज्वाला स्वतंत्रता के लिए चमक उठी। यह बलिदान एक जलती हुई प्रेरणा के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो स्वतंत्रता की ज्योति को प्रज्वलित करता है।

तृतीय पद:

"बढ़ जाता है मान वीर का, रण में बलि होने से
मूल्यवती होती सोने की भस्म, यथा सोने से
रानी से भी अधिक हमें अब, यह समाधि है प्यारी
यहाँ निहित है स्वतंत्रता की, आशा की चिंगारी**

कवयित्री बताती हैं कि रणभूमि में वीर का मान और प्रतिष्ठा तब और बढ़ जाती है जब वह बलिदान देता है। यह बलिदान उसकी वीरता और मूल्य को और ऊंचा कर देता है, ठीक उसी तरह जैसे सोने की भस्म भी सोने की ही तरह मूल्यवान होती है। इस संदर्भ में रानी लक्ष्मीबाई के बलिदान के बाद उनकी समाधि और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। यह समाधि सिर्फ एक शारीरिक स्मारक नहीं है, बल्कि इसमें स्वतंत्रता की आशा की चिनगारी निहित है, जो सदैव जलती रहेगी और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी।

चतुर्थ पद:

*"इससे भी सुन्दर समाधियाँ, हम जग में हैं पाते
उनकी गाथा पर निशीथ में, क्षुद्र जंतु ही गाते
पर कवियों की अमर गिरा में, इसकी अमिट कहानी
स्नेह और श्रद्धा से गाती, है वीरों की बानी"*

कवयित्री कहती हैं कि संसार में इससे भी सुंदर और भव्य समाधियाँ मिल सकती हैं, लेकिन उनकी कहानियों को महत्वहीन प्राणी (क्षुद्र जंतु) गाते हैं, यानी वे इतिहास में अप्रसिद्ध रह जाती हैं। परंतु रानी लक्ष्मीबाई की समाधि की गाथा कवियों के अमर शब्दों में जीवित रहती है। कवियों की वाणी इसे अमर कर देती है, और यह वीरता और बलिदान की कहानी हमेशा स्नेह और श्रद्धा के साथ गाई जाएगी। यह गाथा न केवल इतिहास का हिस्सा है, बल्कि यह अमर है और सदैव प्रेरणादायक बनी रहेगी।

पंचम पद:

*"बुंदेले हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी
खूब लड़ी मरदानी वह थी, झाँसी वाली रानी
यह समाधि यह चिर समाधि है, झाँसी की रानी की
अंतिम लीला स्थली यही है, लक्ष्मी मरदानी की"*

इस अंतिम पद में कवयित्री बुंदेलखंड के हरबोलों की उस प्रसिद्ध कहावत का उल्लेख करती हैं जिसमें झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की वीरता का वर्णन है—"खूब लड़ी मरदानी, वह तो झाँसी वाली रानी थी।" यह वाक्यांश रानी लक्ष्मीबाई की वीरता और संघर्ष की गाथा को संक्षेप में प्रस्तुत करता है। उनकी समाधि केवल उनकी मृत्यु का स्मारक नहीं है, बल्कि यह उनकी वीरता और बलिदान की चिरस्थायी प्रतीक है। यह वह स्थल है, जहाँ उनकी अंतिम लड़ाई और बलिदान संपन्न हुए थे, और उनकी गाथा अमर हो गई थी।

सारांश:

कविता "झाँसी की रानी की समाधि पर" में सुभद्रा कुमारी चौहान ने रानी लक्ष्मीबाई की वीरता, बलिदान और स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान को अत्यंत श्रद्धा और सम्मान के साथ प्रस्तुत किया है। यह कविता न केवल रानी लक्ष्मीबाई के बलिदान का वर्णन करती है, बल्कि उनकी समाधि को स्वतंत्रता की प्रेरणा और संघर्ष की चिरस्थायी स्मृति के रूप में देखती है। कवयित्री का मानना है कि रानी लक्ष्मीबाई की समाधि में निहित बलिदान की ज्वाला और स्वतंत्रता की आशा सदैव प्रज्वलित रहेगी, और यह समाधि आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी। काव्यागत विशेषता

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताएँ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के युग में लिखी गईं, और उनके काव्य में वीरता, राष्ट्रभक्ति, बलिदान, और संघर्ष के अद्वितीय भाव मिलते हैं। उनकी कविताएँ न केवल प्रेरणादायक हैं, बल्कि उनमें भारतीय नारी शक्ति का अद्भुत चित्रण किया गया है। उनके काव्य का स्वर राष्ट्रीयता, सामाजिक चेतना, और नारी सम्मान के प्रति समर्पण से परिपूर्ण है। आइए, उनकी कविताओं **झाँसी की रानी** और **झाँसी की रानी की समाधि पर** के आधार पर उनकी काव्यगत विशेषताओं पर विस्तार से चर्चा करें।

1. **वीर रस और राष्ट्रभक्ति:**

सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में वीर रस की प्रधानता है। उनकी कविताएँ विशेषकर **झाँसी की रानी** और **झाँसी की रानी की समाधि पर** वीरता और राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत हैं। उन्होंने भारतीय वीर नारी के रूप में रानी लक्ष्मीबाई को चित्रित किया है, जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर स्वतंत्रता संग्राम को प्रेरणा दी। उनका काव्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के वीरों के बलिदान को नमन करता है और पाठकों को भी वीरता और देशभक्ति की भावना से भर देता है।

उदाहरण:

"खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी"

इस पंक्ति में उन्होंने नारी की वीरता और उसके साहस को पुरुषों के समकक्ष रखा है, जो तत्कालीन समाज में क्रांतिकारी विचारधारा का परिचायक है।

2. **नारी शक्ति का सशक्त चित्रण:**

सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने काव्य में भारतीय नारियों की शक्ति, साहस और आत्मनिर्भरता को अत्यंत सशक्त रूप से प्रस्तुत किया है। उन्होंने नारी को न केवल घर-परिवार की सीमाओं में बंधी हुई दिखाया, बल्कि उसे रणभूमि में संघर्षरत

और अपने देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाली वीरांगना के रूप में चित्रित किया। उनके काव्य में रानी लक्ष्मीबाई की वीरता और दृढ़ संकल्प का वर्णन अत्यंत प्रभावशाली है, जो समाज में नारी के सशक्त रूप की पहचान कराता है।

उदाहरण:

“अंतिम लीलास्थली यही है, लक्ष्मी मरदानी की”

3. **सरल और प्रभावशाली भाषा:**

सुभद्रा कुमारी चौहान की भाषा सरल, सजीव और प्रभावशाली है। उनकी कविताओं में लोक भाषा का सहज प्रवाह है, जो जनमानस के हृदय तक पहुंचता है। उन्होंने अपनी कविताओं में अत्यधिक अलंकारों का प्रयोग नहीं किया, बल्कि सरल शब्दों में गहरे अर्थों को व्यक्त किया है। उनकी भाषा का यह गुण उनकी कविताओं को जनप्रिय और प्रभावी बनाता है।

उदाहरण:

“इस समाधि में छिपी हुई है, एक राख की ढेरी
जल कर जिसने स्वतंत्रता की, दिव्य आरती फेरी”

इन पंक्तियों में सरल शब्दों का प्रयोग करके गहरे भाव व्यक्त किए गए हैं।

4. **इतिहास और परंपरा का समावेश:**

सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने काव्य में इतिहास और भारतीय परंपरा का विशेष रूप से समावेश किया है। उनकी कविताओं में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और उसमें भाग लेने वाले वीर नायकों का स्मरण किया गया है। विशेषकर “झांसी की रानी” कविता में, उन्होंने रानी लक्ष्मीबाई के संघर्ष और बलिदान को इतिहास से लेकर कविता में सजीव किया है। इस प्रकार, उनके काव्य में इतिहास और वर्तमान का एक अद्भुत सामंजस्य देखने को मिलता है।

5. **भावनाओं की सजीवता:**

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में भावनाओं की सजीवता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। चाहे वह वीरता हो, बलिदान हो, या राष्ट्रभक्ति—उनकी कविताएँ पाठक के मन में गहरे भावों को जागृत करती हैं। उनकी काव्यशैली ऐसी है कि पाठक उनके शब्दों के माध्यम से भावनाओं को महसूस कर पाता है।

उदाहरण:

“बढ़ जाता है मान वीर का, रण में बलि होने से
मूल्यवती होती सोने की भस्म, यथा सोने से”

इस पंक्ति में वीरता और बलिदान की सजीवता स्पष्ट है, जो पाठक के मन में वीरता और सम्मान की भावना को जागृत करती है।

6. **प्रेरणादायक और उत्साही स्वर:**

उनकी कविताएँ अत्यंत प्रेरणादायक हैं और उनमें एक उत्साह का स्वर विद्यमान है। उनकी कविता “झांसी की रानी” ने स्वतंत्रता संग्राम के दौर में अनगिनत लोगों को प्रेरित किया। कविता का स्वर न केवल प्रेरक है, बल्कि यह जनमानस को संघर्ष के लिए तत्पर रहने की प्रेरणा भी देता है।

7. **लोकप्रियता और प्रभाव:**

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताएँ सरलता और मार्मिकता के कारण अत्यंत लोकप्रिय रहीं। उनकी कविता “झांसी की रानी” इतनी प्रसिद्ध है कि इसे भारत के हर हिस्से में लोग जानते हैं और गाते हैं। यह कविता स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीयों के दिलों में एक प्रेरणास्त्रोत के रूप में गूंजती रही। कवयित्री की यह विशेषता रही कि उन्होंने आम जनता की भाषा में गहरे भावनात्मक और राष्ट्रीय मुद्दों को उठाया, जो उनके काव्य को जन-जन तक पहुंचाने में सहायक सिद्ध हुआ।

8. **वीरांगनाओं के प्रति विशेष श्रद्धा:**

सुभद्रा कुमारी चौहान की काव्यशैली में भारतीय वीरांगनाओं के प्रति विशेष श्रद्धा और सम्मान प्रकट होता है। उन्होंने विशेषकर रानी लक्ष्मीबाई जैसी महान नारियों की वीरता का बखान किया, जो न केवल प्रेरणा का स्रोत है, बल्कि नारी शक्ति की महत्ता को भी उजागर करता है।

निष्कर्ष:

सुभद्रा कुमारी चौहान की काव्यशैली उनकी राष्ट्रभक्ति, सरल भाषा, नारी सशक्तिकरण, और वीर रस की अद्भुत प्रतिभा का प्रतीक है। उनकी कविताएँ भावनात्मक, प्रेरणादायक और जनमानस को छूने वाली हैं। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और नारी शक्ति को एक नई ऊंचाई दी, और उनकी कविताओं ने समाज में जागरूकता और संघर्ष की भावना को प्रबल किया।

वीरों का कैसा हो वसंत कविता की विशेषता

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता **"वीरों का कैसा हो वसंत"** भारतीय वीरता, राष्ट्रभक्ति, और संघर्ष का अद्भुत चित्रण है। इस कविता के आधार पर उनकी काव्यगत विशेषताएँ स्पष्ट होती हैं, जो उनके काव्य को विशेष रूप से प्रेरणादायक और प्रभावशाली बनाती हैं। आइए इस कविता के आधार पर उनकी काव्यगत विशेषताओं पर विस्तार से चर्चा करें:

1. **वीर रस की प्रधानता:**

"वीरों का कैसा हो वसंत" कविता में वीर रस की प्रधानता है। सुभद्रा कुमारी चौहान ने इस कविता में वीरता, युद्ध, और बलिदान के भावों को प्रमुख रूप से उभारा है। वसंत ऋतु, जो सामान्यतः आनंद, प्रेम और सौंदर्य की ऋतु मानी जाती है, उसे उन्होंने वीरों के लिए संघर्ष और कर्तव्य की ऋतु के रूप में प्रस्तुत किया है। वीरों के लिए वसंत का समय युद्ध और बलिदान का होता है, न कि व्यक्तिगत सुख और आनंद का।

उदाहरण:

**"सब पूछ रहे हैं दिग-दिगंत
वीरों का कैसा हो वसंत"**

इस पंक्ति में वीरों के लिए वसंत को एक संघर्षपूर्ण समय के रूप में चित्रित किया गया है।

2. **राष्ट्रभक्ति और देशप्रेम:**

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में राष्ट्रभक्ति की भावना बहुत गहरी है। **"वीरों का कैसा हो वसंत"** में उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि देश के वीर सपूतों के लिए प्रेम और सौंदर्य से अधिक महत्वपूर्ण देशभक्ति और कर्तव्य है। जब राष्ट्र संकट में हो, तो वीरों के लिए वसंत केवल कर्तव्य और युद्ध का प्रतीक होता है। उनकी कविताओं में यह राष्ट्रप्रेम न केवल व्यक्तिगत भावनाओं तक सीमित है, बल्कि यह सामूहिक रूप से समाज को प्रेरित करता है।

उदाहरण:

**"कह दे अतीत अब मौन त्याग
लंके तुझमें क्यों लगी आग
ऐ कुरुक्षेत्र अब जाग जाग"**

इस पंक्ति में अतीत के युद्धक्षेत्रों (लंका और कुरुक्षेत्र) को पुकारा गया है, जो भारतीय वीरता और राष्ट्रभक्ति के प्रतीक हैं।

3. **प्रकृति और वीरता का अनूठा संयोजन:**

इस कविता में सुभद्रा कुमारी चौहान ने वसंत ऋतु के प्राकृतिक सौंदर्य और वीरता के बीच एक अनूठा संयोजन प्रस्तुत किया है। वसंत को प्रेम और आनंद की ऋतु के रूप में देखा जाता है, लेकिन वीरों के लिए यह संघर्ष और कर्तव्य की ऋतु है। इस प्रकार, कवयित्री ने वसंत के पारंपरिक अर्थ को वीरता और युद्ध के संदर्भ में पुनः परिभाषित किया है।

उदाहरण:

**"फूली सरसों ने दिया रंग
मधु लेकर आ पहुँचा अनंग
वधु वसुधा पुलकित अंग-अंग"**

यहाँ वसंत के सौंदर्य का वर्णन है, लेकिन इसके बाद उन्होंने वीरों के संदर्भ में सवाल उठाया कि उनके लिए यह वसंत कैसा हो?

4. **युद्ध और संघर्ष का चित्रण:**

कविता में युद्ध और संघर्ष का सजीव चित्रण किया गया है। वीरों का जीवन संघर्ष और कर्तव्य के प्रति समर्पण से भरा होता है, और सुभद्रा कुमारी चौहान ने इस संघर्ष को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। युद्ध का दृढ़ संकल्प, हथियारों की गूँज, और कर्तव्य की भावना को उन्होंने इस कविता में दर्शाया है।

उदाहरण:

**"भर रही कोकिला इधर तान
मारू बाजे पर उधर गान
है रंग और रण का विधान"**

यहाँ युद्ध के साथ-साथ वसंत की मधुरता और संघर्ष का मिश्रण दिखाया गया है, जो वीरों के जीवन की वास्तविकता को दर्शाता है।

5. **संवेदनशील और प्रेरणादायक भाषा:**

सुभद्रा कुमारी चौहान की भाषा अत्यंत संवेदनशील और प्रेरणादायक है। उन्होंने सरल शब्दों का प्रयोग किया है, लेकिन उन शब्दों में गहरी संवेदनाएँ और भावनाएँ छिपी होती हैं। उनकी भाषा में वीरता का उत्साह और बलिदान की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। कविता की भाषा न केवल वीरों के कर्तव्यों को बताती है, बल्कि पाठकों के मन में देशभक्ति और संघर्ष के प्रति जागरूकता भी पैदा करती है।

6. **अतीत की गौरवशाली घटनाओं से प्रेरणा:**

सुभद्रा कुमारी चौहान का काव्य इतिहास और अतीत के वीरों से प्रेरित है। उन्होंने इस कविता में भी अतीत के वीरों और युद्धों का उल्लेख किया है, जैसे कि लंका और कुरुक्षेत्र। यह अतीत की वीरता और बलिदान को स्मरण कर वर्तमान पीढ़ी को प्रेरित करने का प्रयास है। उनके काव्य में इतिहास के वीर नायक जीवंत होते हैं और वर्तमान समय के वीरों के लिए आदर्श प्रस्तुत करते हैं।

उदाहरण:

*"कह दे अतीत अब मौन त्याग
लंके तुझमें क्यों लगी आग
ऐ कुरुक्षेत्र अब जाग जाग"

7. **कर्तव्य और बलिदान का महत्व:**

कविता में कर्तव्य और बलिदान को सर्वोपरि बताया गया है। कवयित्री ने यह स्पष्ट किया है कि वीरों के लिए व्यक्तिगत सुख और वसंत का आनंद मायने नहीं रखता, उनके लिए कर्तव्य सबसे महत्वपूर्ण होता है। वसंत का समय भी उनके लिए केवल कर्तव्य पालन और युद्ध के लिए समर्पित होता है।

उदाहरण:

*"गलबाहें हों या कृपाण
चलचितवन हो या धनुषबाण"

यहाँ व्यक्तिगत सुख (गलबाहें) और कर्तव्य (कृपाण) के बीच का द्वंद्व दिखाया गया है, जहाँ वीरों को कर्तव्य और युद्ध को चुनने का संदेश दिया गया है।

8. **प्रेरणादायक और उत्साही स्वर:**

"वीरों का कैसा हो वसंत" में कवयित्री का स्वर अत्यंत प्रेरणादायक और उत्साही है। उनकी कविता वीरों को संघर्ष और बलिदान के लिए प्रेरित करती है। यह कविता न केवल वीरता और कर्तव्य को महत्व देती है, बल्कि उन लोगों को भी प्रेरित करती है, जो जीवन के संघर्ष में किसी बड़े लक्ष्य के लिए काम कर रहे हैं।

निष्कर्ष:

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता *"वीरों का कैसा हो वसंत"* उनके काव्य में राष्ट्रभक्ति, वीरता, बलिदान, और कर्तव्य की भावना को गहराई से उकेरती है। उनकी काव्यशैली सरल, सजीव, और प्रेरणादायक है। उन्होंने इस कविता में वसंत के पारंपरिक अर्थ को वीरता और कर्तव्य के संदर्भ में पुनः परिभाषित किया है, जो उनके काव्य की विशेषता है। इस प्रकार, सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताएँ भारतीय वीरता और राष्ट्रप्रेम की अद्वितीय अभिव्यक्ति हैं।